

कोंडापल्ली खिलौने

हमारा देश भारत कला एवं सांस्कृतिक दृष्टि से सदैव धनी रहा है। आज आधुनिकता के प्रभाववश अनेक कलाएँ शनैः शनैः विलुप्त हो रही हैं। जिन्हें हमें अपने प्रयासों से बचाने की आवश्यकता है। इन्हीं में से एक है 'कोंडापल्ली खिलौना' निर्माण की कला। लकड़ी से बने खिलौने आन्ध्रप्रदेश के कृष्णा जिले में कोंडापल्ली में बनाए जाते हैं।

ब्रह्माण्ड पुराण के अनुसार चार सौ वर्ष पूर्व राजस्थान में स्वयं भगवान शिव द्वारा मुक्तऋषि को इस कला में पारंगत किया गया था। कोंडापल्ली खिलौना बनाने वाले कारीगर अय्यकक्षत्रीय या नकरशाल के नाम से जाने जाते हैं। 16 वीं सदी में नकरशाल प्रजाति राजस्थान से आन्ध्रप्रदेश आयी और यहाँ के अनविना रेड्डी राजा ने इनकी कला से प्रभावित हो इन्हें राजकीय संरक्षण प्रदान किया। तभी से यह शिल्प बिना जातिगत एवं सामुदायिक पृष्ठभूमि के उन सबको सिखाया गया जिसने भी कौशल एवं लगन का प्रदर्शन किया। आन्ध्रप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री एन.टी.रामा राव ने 1987 में इन शिल्पकारों को जमीनें एवं दुकानें प्रदान कर बौम्माला कालोनी की स्थापना की।

कोंडापल्ली खिलौनों का निर्माण एक विशिष्ट प्रकार की लकड़ी टेलोपोंकी लकड़ी से किया जाता है। इस लकड़ी का विशिष्ट चरित्र लचीलापन खिलौनों को वांछित आकार देने में सहायक होता है। प्रारम्भ में इस लकड़ी को नमी रहित बनाने हेतु गर्म किया जाता है। फिर खिलौनों के सभी हिस्सों को अलग – अलग नक्काश किया जाता है। इसके बाद सभी हिस्सों को इमली के बीज को कुचलकर बनाए गए गोंद से चिपकाया जाता है। इसके पश्चात् तामचीनी एवं वनस्पति रंगों का प्रयोग कर इन्हें रंगीत किया जाता है। इसके लिए बकरी के बालों से बने पतले एवं नरम पेंट ब्रश का प्रयोग किया जाता है।

तेलुगु राज्यों की सांस्कृतिक परम्पराओं में कोंडापल्ली खिलौनों की विशेष भूमिका रही है। सक्रांति एवं नवरात्री के दौरान प्रमुख मंदिरों जैसे कनक दुर्गा मंदिर और श्री शैलम में मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर में पवित्र जलूस प्रारम्भ होने से पूर्व कोंडापल्ली खिलौने पूजा हेतु रखे जाते हैं। इसे बौम्माला कोलुवु की प्रथा में कृष्ण अर्जुन की उपदेश देते हुए, नाचने वाली गुडिया, बुद्ध आदि ग्रामीण जीवन, धर्म और पौराणिक कथाओं से सम्बंधित खिलौनों का प्रदर्शन किया जाता है।

आज के भारत में जीवन की बढ़ती रफ्तार के साथ कोंडापल्ली खिलौने अपनी प्रासंगिकता खोते जा रहे हैं। कच्चे माल खासतौर पर लकड़ी की कमी, बनाने में लगने वाला अधिक समय एवं अधिक लागत के चलते इनसे मुनाफा कम होता है साथ ही नयी पीढ़ी का ना तो इस हस्तकला को सीखने में और न ही इन खिलौनों से खेलने में ही कोई रुझान है। ऐसे में चीन के सस्ते एवं टिकाऊ, चकाचौंध से भरपूर, प्लास्टिक एवं धातु से बने खिलौनों से प्रतिस्पर्धा कोंडापल्ली खिलौनों के अस्तित्व हेतु खतरा बन गयी है। यद्यपि लेपाक्षी, अमेज़ॉन और माई स्टेट बाजार ने शिल्प को बढ़ावा देने हेतु उत्पादों को समर्थन दिया है। परन्तु यह प्रचार भी पर्याप्त मददगार नहीं साबित हुआ। आज भी यह हस्तकला, शिल्पग्राम, हैदराबाद एवं अन्य शिल्प मेलों तक ही सीमित रह गई है।

कोंडापल्ली खिलौनों निर्माण का अस्तित्व बनाए रखने हेतु सरकार ने एक 'वुड बैंक' की स्थापना की है। जिसके अन्तर्गत खिलौना निर्माण में काम आने वाली लकड़ी के लिए पेड़ों को ज्यादा से ज्यादा संख्या में लगाया जा रहा है। अनेक रूपों में सरकारी सहायता एवं कारीगरों को प्रोत्साहन प्रदान किया जा रहा है। खिलौनों को भी पारम्परिक कृतियों तक सीमित न कर नयी मांगों के अनुसार जैसे पेन-स्टेण्ड, शतरंज का खेल आदि नये प्रयोग भी किए रहे हैं। ये सभी प्रयास काफी नहीं हैं एवं इस हस्तकला की बचाने के लिए हमें युद्ध स्तर पर कार्य करना होगा।

कोंडापल्ली खिलौने बनाने की कला जहाँ एक ओर हमारी परम्पराओं को सहेजकर रखने हेतु महत्वपूर्ण है वहीं दूसरी ओर हमारी नयी पीढ़ी को पौराणिक कथाओं से अवगत करवाती है। किसी भी भाँति के रसायनों का प्रयोग न कर इन खिलौनों को बच्चों के खेलने हेतु ज्यादा सुरक्षित एवं पर्यावरण अनुकूल माना जाता है। तो बच्चों, क्यों न इतनी महत्वपूर्ण हस्तकला को प्रोत्साहित किया जाए और प्रण लिया जाए कि हम सब मिलकर न केवल इन लुप्त होती शिल्प कलाओं के बारे में ज्यादा से ज्यादा स्वयं जानेंगे बल्कि औरों को भी इससे अवगत कराएँगे। साथ ही भविष्य में न केवल स्वयं के लिए इन खिलौनों की खरीदेंगे बल्कि प्रत्येक मौकों जैसे की जन्मदिन, शादी आदि पर उपहारस्वरूप इन्हीं का उपयोग करेंगे।

1. कोंडापल्ली खिलौना निर्माण की प्रक्रिया के चार भागों का सही क्रम बताइये

- (i) खिलौनों के सभी हिस्सों को अलग – अलग नक्काश करना
- (ii) तामचीनी व वनस्पति रंगों से रंगना
- (iii) लकड़ी गर्म कर नमी रहित बनाना
- (iv) इमली बीज कुचल बनाए गोंद से सभी हिस्से चिपकाना

- (अ) (i) (ii) (iii) (iv)
(ब) (iii) (i) (ii) (iv)
(स) (iii) (i) (iv) (ii)
(द) (iv) (ii) (iii) (i)

2. उपरोक्त पठन के अनुसार कौडापल्ली खिलौनों की महत्ता किन त्योहारों से जुड़ी है।

- (अ) दीपावली एवं होली
(ब) संक्रांति एवं नववर्ष
(स) नवरात्रि एवं संक्रांति
(द) दीपावली एवं दशहरा

3. कौडापल्ली खिलौना निर्माण कला के लुप्त होने का कारण है :-

- (अ) आधुनिक संदर्भ में मूल्य परिवर्तन
(ब) परम्पराओं को सहेजने में असमर्थता
(स) नयी पीढ़ी से पौराणिक कथाओं की अनभिज्ञता
(द) रसायन रहित एवं पर्यावरण अनुकूलता

4. चार ऐसे नवीन तरीके बताइये जिनके द्वारा हम कौडापल्ली खिलौना निर्माण शिल्पकला को बढ़ावा दे सकते हैं।

5. आप अपनी सामान्य जीवन शैली में ऐसी किन वस्तुओं का प्रयोग करते हैं जो हस्तकला उद्योग से जुड़ी है? उनकी एक सूची तैयार कीजिए।
